आदर्श प्रश्न पत्र

नाट्यकला (285)

अवधि- 2 घंटे **अधिकतम अंक: 60**

निर्देश:-

1.इस प्रश्न पत्र में 31 प्रश्न हैं जिनमें [A] भाग में 12, [B] भाग में 09, [C] भाग में 06, [D] 02 और [E] भाग में 02 शामिल हैं।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

3.प्रत्येक प्रश्न के दाईं ओर प्रश्न के लिए निर्धारित अंक दिया गया है।

4.भाग [A] में प्रश्न संख्या 01 से 12 - वस्तुनिष्ठ/बहुविकल्पीय प्रकार के प्रश्न (MCQs) दिये गए हैं प्रत्येक एक अंक के होंगे। इनमें से प्रत्येक प्रश्न में दिए गए चार विकल्पों में से सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें और लिखें। इनमें से कुछ प्रश्नों पर एक आंतरिक विकल्प प्रदान किया गया है। ऐसे प्रश्नों में दिए गए विकल्पों में से केवल एक ही करना चाहिए।

5.भाग [B] में प्रश्न संख्या 13 से 21 - वस्तुनिष्ठ प्रश्न/मिलान, रिक्त स्थान, सत्य-असत्य आदि दिए गए हैं। प्रत्येक प्रश्न दो अंक का है। निर्देशानुसार उत्तर दें।

6. भाग [C] में प्रश्न संख्या 22 से 27 तक अतिलघूत्तरीय प्रश्न दिए गए हैं। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है। निर्देशानुसार उन्हें 30 से 50 शब्दों की सीमा में समाहित किया जाना चाहिए।

7.भाग [D] में प्रश्न संख्या 28 से 29 तक लघूत्तरीय प्रश्न हैं।प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है।निर्देशानुसार उन्हें 50 से 80 शब्दों की सीमा में समाहित किया जाना चाहिए।

8.भाग [E] में प्रश्न संख्या 30 से 31 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है। निर्देशानुसार उन्हें 80 से 100 शब्दों की सीमा में समाहित किया जाना चाहिए।

भाग-A

नोट- उचित विकल्प का चयन कीजिए-

1. उचित विकल्प का चयन कीजिए- 1

अ. भारतीय ज्ञान-परंपरा में नाट्यशास्त्र किसकी रचना मानी जाती है।

क. व्यास मुनि ख. भरत मुनि

ग. गौतम मुनि घ. मतंग मुनि

2. उचित विकल्प का चयन कीजिए- 1

अ. आचार्य अभिनवगुप्त के अनुसार नाट्यशास्त्र का अपर नाम है-

क. नटशास्त्र ख. भरतसूत्र

ग. नाट्यवेद घ. उपर्युक्त सभी

3. उचित विकल्प का चयन कीजिए- 1

संगीत की प्रथम शास्त्रीय पद्धति का संकेत किस वेद में मिलता है।

क. गंधर्ववेद ख. अथर्ववेद

ग. धनुर्वेद घ. सर्पवेद

4. उचित विकल्प का चयन कीजिए- 1

अ. निम्नलिखित में कौन-सा नायक का प्रकार नहीं है?

क. धीरललित ख. धीरोदात्त

ग. धीरप्रशान्त घ. प्रगल्भा

5. उचित विकल्प का चयन कीजिए- 1

साहित्य दर्पण के लेखक कौन हैं?

क. भारत मुनि ख. कालिदास

ग. आचार्य मम्मट घ. आचार्य विश्वनाथ

6. उचित विकल्प का चयन कीजिए- 1

अ. वीर रस का स्थायी भाव कौन सा है ?

क. जुगुप्सा ख. उत्साह

ग. भय घ. क्रोध

7. उचित विकल्प का चयन कीजिए- 1

अ. कुंदमाला नाटक के लेखक कौन हैं ?

क. भास ख. महाकवि भारवि

ग. दिङ्नाग घ. विश्वनाथ

8. उचित विकल्प का चयन कीजिए- **1**

अ. कुंदमाला नाटक वाल्मीकि रामायण के किस कांड से संबन्धित है ?

क. सुंदरकाण्ड ख. उत्तरकाण्ड

ग. अयोध्याकाण्ड घ. अरण्यकाण्ड

9. उचित विकल्प का चयन कीजिए- **1**

कुंदमाला नाटक में किस रस की प्रधानता है?

क. रौद्र रस ख. करुण रस

ग. भयानक रस घ. वीर रस

10. उचित विकल्प का चयन कीजिए- **1**

भारत दुर्दशा नाटक के लेखक कौन हैं?

क. भारतेन्दु हरिश्चंद्र ख. सत्यवादी हरिश्चंद्र

ग. मुंशी प्रेमचंद घ. जयशंकर प्रसाद

11. उचित विकल्प का चयन कीजिए- **1**

भारत दुर्दशा नाटक के प्रथम अंक योगी किस गायन की शुरुआत करता है ?

क. ध्रुपद गायन ख. ठुमरी गायन

ग. लावणी गायन घ. तराना

12. उचित विकल्प का चयन कीजिए- **1**

भारत दुर्दशा नाटक के सभी पात्र हैं?

क. प्रतीकात्मक ख. नकारात्मक

ग. व्यंग्यात्मक घ. उपर्युक्त सभी

भाग-B

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

13. नाट्य में तीन प्रधान तत्व हैं- वस्तु, ... और .....। 2

14. भरतमुनि के अनुसार ..... के निर्माण के पश्चात् ..... अर्थात् लकड़ी का काम प्रारम्भ करना चाहिए। 2

15. .....-निर्माण एवं शिल्प-विज्ञान का नाम ..... कला है। 2

16. उचित मिलान कीजिए- 2

खण्ड-अ	खण्ड-ब
(i). यजुर्वेद	क. पाठ्य
(ii). सामवेद	ख. संगीत
	ग.अभिनय

17. उचित मिलान कीजिए- 2

खण्ड-अ	खण्ड-ब
(i). रस की कारण सामाग्री के वाचक शब्द	क. व्यभिचारी
(ii). रसनिष्पत्ति की प्रक्रिया के बोधक शब्द	ख. संयोग
	ग. विभाव, अनुभाव

18. उचित मिलान कीजिए- 2

खण्ड-अ	खण्ड-ब
(i). नाट्यशास्त्र 28वें अध्याय में	क. सुषिर वाद्य की चर्चा
(ii). नाट्यशास्त्र 30वें अध्याय में	ख. अनवद्ध वाद्यों का पूरा वर्णन
	ग. वाद्यों के प्रयोग की चर्चा

19. निम्नलिखित वाक्यों में सत्य / असत्य का का चयन कीजिए- 2

अ. भारत दुर्दशा नाटक 1876 में लिखित है । सत्य / असत्य

ब. भारत दुर्दशा नाटक के सभी पात्र पुरुष हैं। सत्य / असत्य

20. निम्नलिखित वाक्यों में सत्य / असत्य का का चयन कीजिए- 2

अ. सम्पूर्ण नाट्य शास्त्र में 16 अध्याय संगीत पर केन्द्रित हैं। सत्य / असत्य

आ. नाटक में गाए जाने वाले गीतों को ध्रुवागान कहते हैं। सत्य / असत्य

21. निम्नलिखित वाक्यों में सत्य / असत्य का का चयन कीजिए- 2

अ. भट्टनायक के अनुसार रस ध्वनि ही काव्य की आत्मा है। सत्य / असत्य

ब. नाटक का आरंभ होने पर पात्रों के प्रवेश के समय गाई जाने वाली ध्रुवा 'नैष्क्रमिणी' कहलाती है। सत्य / असत्य

भाग-C

अतिलघूत्तरीय प्रश्न

22. अभिनय कितने प्रकार का होता है? नाम लिखिए। 2

अथवा

आङ्गिक अभिनय के कितने प्रकार हैं? नाम लिखिए।

23. सहृदय व्यक्ति किसे कहते हैं? 2

अथवा

चित्त की विशदता का क्या अर्थ है?

24. कुंदमाला नाटक के अनुसार कण्व तथा बादरायण किसके शिष्य थे? 2

अथवा

कुंदमाला नाटक की नायिका कौन है?

25. कुंदमाला नाटक के अनुसार वाल्मीकि राम की भर्त्सना क्यों करते हैं? 2

26. भारतेन्दु रचित किन्हीं चार मौलिक नाटकों के नाम लिखिए। 2

27. नाटक रंगमंच में अंतरा ध्रुवा का गान कब करना चाहिए? 2

भाग-D

लघुत्तरीय प्रश्न

28. संगीत कला पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। 3

अथवा

स्थापत्य कला (वास्तुकला) पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

29. वीररस को परिभाषित करते हुए एक उदाहरण दीजिए। 3

भाग-E

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

30. स्वकीया नायिका एवं उसके प्रकार को विस्तार से समझाइए। 6

अथवा

परकीया नायिका एवं उसके भेद को विस्तार से समझाइए।

31. कुंदमाला नाटक के प्रथम अंक की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए। 6

अंक योजना
नाट्यकला (285)

अवधि- 2 घंटे **अधिकतम अंक: 60**

क्रं संख्या	उत्तर	अंक
1.	अ. ख. भरत मुनि	1
2.	अ. घ. उपर्युक्त सभी	1
3.	क. गंधर्ववेद	1
4.	अ. घ. प्रगल्भा	1
5.	घ. आचार्य विश्वनाथ	1
6.	**अ.** ख. उत्साह	1
7.	**अ.** ग. दिङनाग	1
8.	**अ.** ख. उत्तरकाण्ड	1
9.	ख. करुण रस	1
10.	क. भारतेन्दु हरिश्चंद्र	1
11.	ग. लावणी गायन	1
12.	क. प्रतीकात्मक	1
13.	नेता / रस	2
14.	नाट्यमण्डप / दारुकर्म	2
15.	भवन/ वास्तु	2
16.	(i). ग.अभिनय (ii). ख. संगीत	2
17.	(i). ग. विभाव, अनुभाव (ii). क. व्यभिचारी	2
18.	(i). ग. वाद्यों के प्रयोग की चर्चा (ii). क. सुषिर वाद्य की चर्चा	2
19.	अ. असत्य ब. असत्य	2
20.	अ. असत्य ब. सत्य	2
21.	अ. सत्य ब. असत्य	2
22.	सभी नाट्यचार्यों ने अभिनय के चार प्रकारों की चर्चा की है, वे हैं -	2

	आंगिक, वाचिक, आहार्य और सात्विक। **अथवा** आचार्य भारत आंगिक अभिनय के तीन प्रकारों की चर्चा करते हैं - शरीरज, मुखज और चेष्टकृत (चेष्टाक्रियाभिनय)	
23.	1. काव्य को पढ़ने, सुनने या नाटक को देखने के बाद उससे आनन्द अनुभव करने वाला व्यक्ति सहृदय कहलाता है। 'सहृदय' का शाब्दिक अर्थ है- 'समान हृदयवाला।' 2. सुख-दुःख आदि की दशा में समान अनुभव वाले सहृदय हैं। 3. काव्य-नाटक के आस्वादन के समय प्रेक्षकों (श्रोता) का अनुभव नायक और कवि समान हो जाता है। अतः काव्य के श्रोताओं और नाटक के दर्शकों का अनुभव कवि और नायक के समान होने से इन्हें सहृदय कहते है। 4. 'सहृदय वह व्यक्ति है जो काव्य-नाटक आदि से आनन्द प्राप्त करने की क्षमता रखता । किसी एक बिन्दु को जिसने लिखा हो। **अथवा** चित्त की विशदता का अर्थ है- हृदय की निर्मलता।	**2**
24.	कुंदमाला नाटक के अनुसार कण्व तथा बादरायण 'वाल्मीकि' के शिष्य थे। **अथवा** कुंदमाला नाटक की नायिका सीता हैं।	**2**
25.	बिना किसी कारण के सीता का परित्याग करने को लेकर वाल्मीकि राम की भर्त्सना करते हैं।	**2**
26.	भारतेंदु के नाटक भारतेंदु ने मौलिक और अनूदित दोनों ही प्रकार के नाटक लिखे। उनके मौलिक नाटकों में वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, सत्य हरिश्चंद्र, प्रेम योगिनी, विषस्य विषमौषधम्, चंद्रावली, भारत दुर्दशा, भारत जननी, नीलदेवी और सती प्रताप जैसे मौलिक नाटक हैं।	**2**
27.	अंतरा का अर्थ है-बीच में। नाटक रंगमंच में अंतरा ध्रुवा का गान तब किया जाता है जब पात्र थक जाय, बेहोश हो जाय, संवाद भूल जाय या फिर अपनी वेशभूषा ठीक करने लग जाय ऐसे में 'अन्तरा' ध्रुवा का गान किया जाना चाहिए।	**2**
28.	**संगीतकला** वास्तुकला,मूर्तिकला,चित्रकला इन कलाओं की अपेक्षा संगीतकला अधिक उत्कृष्ट है। इसका आधार नाद अथवा स्वर होता है जो या तो मानव	**3**

	कण्ठ से प्रसूत होता है या बाह्य यन्त्रों से उत्पन्ना नाद के नियम भी निर्धारित किये गये हैं। संगीत को सात स्वरों में बाँधा गया है। अनन्तकाल से भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम नाद ही था। अतः नाद का प्रभाव मनुष्य के अन्तःकरण पर गहन रूप में देखा जा सकता है। इस संगीत में सार्थक शब्दों को भी क्रमशः सन्निहित कर लिया गया है। गायन, नर्तन और वादन के समाहार को संगीत कहते हैं। संगीत के सात अंग होते हैं। राग, स्वर, ताल, वाद्य, नृत्य, भाव और अर्थ। इस प्रकार संगीतकला की व्यापकता एवं शास्त्रीय पद्धति उसे कला तथा विज्ञान का पद प्रदान करती है। विस्तृत संदर्भ-माड्यूल 1,पाठ 3 पृष्ठ 53. **अथवा** **स्थापत्य कला (वास्तुकला)** वास्तुकला को स्थापत्य कला भी कहते हैं। इसमें मूर्त आधार सबसे अधिक स्थूल रहता हैं। इसके मूर्त आधार पत्थर, ईटें धातु खण्ड या काष्ठ रहते हैं जिनसे भवन का ढाँचा खड़ा होता है। इन उपादानों के सहारे वास्तुकार भवन, मन्दिर, अट्टालिका, बाँध आदि का निर्माण करता है, वह सभी प्राकृतिक साधनों रंग. प्रकाश आदि का भी सहयोग लेता है। इनका सुगमतापूर्वक प्रयोग कर वास्तुकार दर्शकों के मन को प्रभावित करता है। अन्य कलाओं में कलाकार को ऐसे प्रभावोत्पत्ति हेतु विशेष कौशल की आवयकता पड़ती है किन्तु वास्तुकार को ये साधन अनायास ही प्राप्त हो सकते हैं। उसकी कृति में गतिशीलता या सजीवता न होने पर भी उसके पास दर्शकों के मन में सौन्दर्यानुभूति या भाव के उन्मेष की क्षमता रहती है। जैसे- सोमनाथ मन्दिर अथवा जन्तर-मन्तर जैसे स्थापत्य के दर्शन से व्यक्ति के मन में जो आह्लाद और भावोन्मेष होता है। वह उतना ही स्थायी और प्राणपूरक है, जितना एक काव्यकृति द्वारा प्राप्त आनन्द । विस्तृत संदर्भ-माड्यूल 1,पाठ 3 पृष्ठ 51.	
29.	**वीररस** वीर रस का स्थायी भाव 'उत्साह' है। शक्ति, धैर्य, शौर्य दान, त्याग आदि से साहस और उल्लास पूर्वक युद्धादि में संलग्नता से यह भाव प्रकट होता है। यह धर्मवीर, दानवीर दयावीर और युद्धवीर भेद से अनेक प्रकार का है। **उदाहरण-** रथी निषङ्गी कवची धनुष्यान् वृप्तः राजन्यकमेकवीरः। विलोलयामास महावराहः कलापक्षयोद्वृत्तमिवार्णवाम्भः ॥	**3**

	जिस प्रकार प्रलय के समय वराह भगवान् समुद्र के बड़े हुए जल को चीरते हुए आगे चलते गये, उसी प्रकार रथ पर बैठे हुए कवच तथा तरकस को धारण किये हुए अद्वितीय वीर राजा अज अकेले ही शत्रुओं की सेना को चीरते चले जा रहे थे। इस उदाहरण में युद्ध वीर रस के घटक तत्त्व और रस निष्पत्ति इस प्रकार है- स्थायी भाव- उत्साह उत्साह का आश्रय- अज आलम्बन विभाव- शत्रुसेना उद्दीपन विभाव- शत्रुओं का मिलकर अज पर आक्रमण, युद्ध भूमि । अनुभाव - अकेले ही शत्रु को चीरना, कवच तीर तरकस आदि धारणकर रथ को लेकर अकेले ही शत्रु सेना पर टूट पडना व्यभिचारी- हर्ष, गर्व, मद आदि इस प्रकार उत्साह के अनुकूल विभावादि के वर्णन से अज का युद्ध के प्रति उत्साह वीररस के रूप में सहृदय को अनुभूत होता	
30.	**स्वकीया नायिका -** इस प्रकार की नायिका शील, आर्जव (सरलता) आदि गुणों से युक्त, व्यवहारनिपुण, गृहकार्य में दक्ष, विवाहिता पतिव्रता नारी होती है। इस प्रकार की नायिका के भी तीन भेद कहे गए हैं-मुग्धा मध्या और प्रगल्भा । **मुग्धा नायिका-** यह अंकुरितयौवना, कामवासना में नवीन, लज्जावती, सुरतक्रीड़ा से कतराने वाली, प्रणय- कोप में भी मृदु होती है। **मध्या नायिका -** यौवन एवं कामवासना से पूर्ण, रतिक्रीड़ा में निपुण तथा सुरतक्रीड़ा को मोह के अन्त तक सहन करने वाली होती है। **प्रगल्भा नायिका-** यौवन के उभार से कामोन्मत्त, सुरत-क्रीड़ा के कौशल से पूर्ण परिचित, काम-व्यवहार में निर्लज्ज, पति के साथ रति-क्रीड़ा में अचेत सी हो जाने वाली तथा विकसित हाव-भाव वाली होती है। **अथवा** **परकीया नायिका-** परकीया नायिका नायक की अपनी परिणीता पत्नी नहीं होती है। वह या तो पर-परिणीता होती है या फिर अविवाहिता कन्यका। इस प्रकार परकीया नायिका के दो भेद होते हैं- परोढा और अनूढा। **परोढा नायिका-** यह दूसरे की विवाहिता पत्नी होती है। विवाहिता होने पर भी वह पर पुरुष के साथ सम्भोग की इच्छा रखती है और निर्लज्ज	**6**

	होती है। **अनूढा नायिका -** यह अविवाहित कन्या होती है और नवयौवना एवं लज्जाशील होती है। वह माता-पिता के परतन्त्र होने से परकीया कहलाती है।	
31.	कुंदमाला नाटक में कुल छः अंकों में कथानक को वर्णित किया गया है। नाटक के लिए दिड्नाग ने वाल्मीकि रचित 'रामायण' के उत्तरकांड को ही अपना मुख्य आधार बनाया है जिसमें सीता निर्वसन की कथा है। किंतु दिङनाग अपनी शाक्ति से कथा का सुखांत करते हैं। **प्रथम अंक** प्रथम अंक के आरंभ में नांदी पाठ के अंतर्गत श्री गणेश की स्तुति प्राप्त होती है। सूत्रधार दर्शकों की रक्षा के लिए शिव की जटाओं से प्रार्थना करके सभासदों को उसके रचनाकार का परिचय ही करा रहा होता है कि तभी अचानक नेपथ्य में या यवनिका के पीछे से लक्ष्मण के शब्द सुनाई देते हैं। सूत्रधार से दर्शकों को पता चलता है कि रावण की अशोक वाटिका में लंबे समय तक रहने के कारण सीता के चरित्र पर कई प्रश्न हुए हैं और लोक निंदा के भय से घबराकर राम ने गर्भवती सीता का परित्याग कर दिया है। लक्ष्मण उन्हें छोड़ने वन की ओर जा रहे हैं। इसके साथ कथा की स्थापना संपन्न होती है। वृक्षों और लताओं के जाल से घिरे हुए गंगा के तट के वनों में रथ नहीं जा पाता। इस कार सीता और लक्ष्मण गंगा के किनारे-किनारे धीरे-धीरे पैदल ही चल रहे हैं। गर्भवती होने कारण सीता जल्दी ही थक जाती हैं और एक पेड़ की छाया में बैठ जाती हैं। विश्राम क के उपरांत लक्ष्मण सीता को बतलाते हैं कि श्रीराम ने लोक अपवाद के डर से उनका त्याग कर दिया है। सीता को जब यह कठोर समाचार मिलता है तो वह आहत होकर मूर्छित हो जाती हैं।विस्तृत संदर्भ-माड्यूल 4,पाठ -11 पृष्ठ 161-162.	**6**